

कृषि कुंभ  
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 02, (जुलाई, 2024)  
पृष्ठ संख्या 01-04



बकरियों का आधुनिक खाद्य प्रबंधन

रुक्या सिद्दीकी एवं मीसम रजा

पीएचडी स्कॉलर

आईसीएआर-आईवीआरआई

इज्जतनगर, बरेली, उत्तरप्रदेश, भारत।

Email Id: -rukkiya1995@gmail.com

परिचय

बकरियों का उचित पोषण सफल बकरी पालन का एक मूलभूत पहलू है, जो उद्यम के समग्र स्वास्थ्य, उत्पादकता और लाभप्रदता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बकरियों की अद्वितीय पोषण संबंधी आवश्यकताएं उम्र, नस्ल और उद्देश्य जैसे कारकों से प्रभावित होती हैं, चाहे वह मांस, दूध या फाइबर उत्पादन के लिए हो। उचित पोषण न केवल बकरियों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाता है बल्कि बकरी पालक की आर्थिक स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। छोटे जुगाली करने वाले पशुओं को पालने से जुड़ी सबसे बड़ी लागत चारा है, जो आमतौर पर कुल उत्पादन लागत का 60 प्रतिशत या अधिक होता है। पोषण प्रबंधन, झुंड के स्वास्थ्य और उत्पादकता के साथ-साथ लाभप्रदता पर भी बहुत बड़ा प्रभाव डालता है।

विशेषताएँ

- बकरियाँ कुशल ब्राउजर होती हैं और जंगली पौधों के साथ-साथ पर्वतमालाओं पर पाए जाने वाले कुछ अन्य जंगली और खरपतवार वाले पौधों को भी खाना पसंद करती हैं।
- वे स्वभाव से अधिक चयनात्मक होते हैं।

- बकरियाँ विभिन्न प्रकार के फाइबर और मोटे चारे को कुशलतापूर्वक पचाने में सक्षम होती हैं।
- बकरियों का दैनिक आहार शरीर के वजन का 3-4 प्रतिशत तक होता है।

आवश्यक पोषक तत्व :

**पानी** : किसी भी अन्य आहार की कमी की तुलना में अपर्याप्त पानी का सेवन बकरी के प्रदर्शन पर अधिक तीव्र और गंभीर प्रभाव डालता है। बकरियों को प्रतिदिन 4-6 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। प्रचुर मात्रा में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करना एक प्रमुख प्रबंधन प्राथमिकता है, खासकर जब बकरियों को उच्च प्रोटीन वाला राशन खिलाया जाता है। बकरी के सर्वोत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए केवल मात्रा ही नहीं बल्कि पानी की गुणवत्ता भी आवश्यक है।

**कार्बोहाइड्रेट** :शर्करा, स्टार्च (अनाज में मौजूद), और फाइबर (सेलूलोज) जैसे कार्बोहाइड्रेट रुमेन रोगाणुओं की गतिविधि के माध्यम से वाष्पील फ़ैटी एसिड (ऊर्जा) में परिवर्तित हो जाते हैं। मेंटेनेंस , गर्भावस्था, स्तनपान और वृद्धि जैसे विभिन्न शारीरिक चरणों के लिए ऊर्जा की जरूरतें अलग-अलग होती हैं। जबकि अधिकांश बकरियों में मेंटेनेंस के लिए ऊर्जा की आवश्यकता लगातार बनी

रहती है, डेयरी बकरियों को औसत से 21 प्रतिशत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

**प्रोटीन** : प्रोटीन बकरियों के पाचन तंत्र में डाइजेस्ट हो कर अमीनो एसिड बनाते हैं जो बाद में छोटी आंत में अवशोषित हो जाते हैं। बकरी का फीड बनाने के लिए विभिन्न प्रोटीन स्रोतों में चारा, घास(जैसे अल्फाल्फा), जौ, मटर (स्क्रीनिंग, साबुत, विभाजित), मक्का, जई, आसुत अनाज और खल (जैसे सोयाबीन, कैनोला, बिनौला) आदि का उपयोग होता है।

**वसा** : बकरियाँ वसा से ऊर्जा प्राप्त करती हैं, जो स्वाभाविक रूप से बकरियों के फीड से प्राप्त होता है। कार्बोहाइड्रेट से उत्पन्न अतिरिक्त ऊर्जा भी वसा के रूप में आंतरिक अंगों के आसपास जमा हो जाती है। यह संग्रहित वसा एक रिजर्व के रूप में कार्य करता है, खासकर दूध उत्पादन के दौरान।

**खनिज और विटामिन** : बकरी को सही स्वास्थ्य और उत्तम उत्पादकता के लिए उचित मिनरल्स और विटामिन्स की आवश्यकता होती है। मिनरल्स, जैसे कि कैल्शियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, आदि, बकरियों के अच्छे बॉडी फंक्शनिंग और ऊर्जा मेटाबोलिज्म के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। विटामिन्स, जैसे कि विटामिन ए, डी, बी12, आदि, उचित आहार के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं, जो उनके इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं और सही विकास और वृद्धि को सुनिश्चित कर सकते हैं। इसके लिए उचित पदार्थों की सही मात्रा और उचित योजना बनाई जानी चाहिए, ताकि बकरियों को सही पोषण मिले और उनका स्वास्थ्य पूरी तरह से बना रहे। कैल्शियम और फास्फोरस (2:1 अनुपात) के सप्लीमेंट बेहतर संरचनात्मक और हड्डी की मजबूती के लिए है, जबकि अन्य खनिज प्रजनन जैसे अन्य प्रणालियों के लिए आवश्यक हैं। बकरियों को कॉपर की पर्याप्त मात्रा (10–80 पीपीएम) प्रदान करना महत्वपूर्ण है

क्योंकि उनमें कॉपर की कमी होने की प्रवृत्ति ज्यादा होती है। सेलेनियम (0.1–3 पीपीएम) एक और खनिज है जो बकरियों के लिए आवश्यक है। खनिज मिश्रण को 0.2 प्रतिशत की दर पर कॉन्सेन्ट्रेट राशन में शामिल किया जा सकता है।

**साधारण नमक** : बकरियों के लिए नमक चाटने की व्यवस्था बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे दूध में अच्छी मात्रा में सोडियम और क्लोराइड आयन स्रावित करती हैं। दैनिक अनाज राशन में 1–2 प्रतिशत नमक शामिल करना सुझावित है।

### खान-पान

बकरियों की खान-पान की आदतें विशिष्ट होती हैं, वे साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखती हैं और अपने आहार में विविधता पसंद करती हैं। उनकी प्राथमिकताओं को समायोजित करने के लिए, घास-रैक का उपयोग करने या दीवार या पेड़ की शाखा पर खूंटों से बंडलों में फीड लटकाया जा सकता है। बकरियों द्वारा खाए जाने वाले चारे की दैनिक मात्रा शरीर के वजन, चारे में शुष्क पदार्थ का प्रतिशत (चारे में 12–35 प्रतिशत से लेकर घास और सांद्रण में 86–92 प्रतिशत तक), स्वादिष्टता और उनके शारीरिक चरण (विकास, गर्भावस्था, या स्तनपान) जैसे कारकों से प्रभावित होती है।

### बकरियों का आहार प्रबंधन

#### 1. गर्भवती बकरियों का पोषण

गर्भवती बकरियों को प्रतिदिन 4–5 घंटे उच्च गुणवत्ता वाले चारागाहों में ग्रेजिंग करानी चाहिए, और उनके आहार में प्रतिदिन प्रति जानवर 5 किलोग्राम उपलब्ध हरा चारा शामिल होना चाहिए। जब चरागाह परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं, तो अतिरिक्त सांद्रण मिश्रण की कोई आवश्यकता नहीं होती। प्रतिकूल स्थितियों में, जब चरागाहों में चारा उपलब्ध ना

हो तब, जानवरों को उनकी उम्र के आधार पर प्रति दिन 150 से 350 ग्राम प्रति जानवर तक सांद्र मिश्रण दिया जाना चाहिए। गर्भावस्था के आखिरी महीने में, भ्रूण की वृद्धि 60-80 प्रतिशत बढ़ जाती है, और फीड में अपर्याप्त ऊर्जा से जानवरों में गर्भावस्था विकार उत्पन्न होते हैं। चराई के साथ-साथ, जानवरों को प्रति दिन 250-350 ग्राम प्रति जानवर की दर से सांद्र मिश्रण खिलाना चाहिए। उनके आहार में 7 किलोग्राम प्रति जानवर प्रतिदिन की दर से हरा चारा उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

जैसे-जैसे प्रसव का समय नजदीक आता है, अनाज की मात्रा को कम कर देना चाहिए, लेकिन अच्छी गुणवत्ता वाला सूखा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। प्रसव के दिन साफ, ठंडे पानी की अच्छी आपूर्ति सुनिश्चित करते हुए हल्का दूध पिलाएं। प्रसव के तुरंत बाद, मादा को थोड़ी मात्रा में हल्का गर्म पानी देना चाहिए। प्रसव के बाद, मां का आहार धीरे-धीरे बढ़ाया जा सकता है ताकि उसे दिन में छह से सात बार विभाजित खुराकों में पूरा राशन मिल सके। पहले कुछ दिनों के दौरान लैक्सेटिव खाद्य पदार्थों को राशन में शामिल किया जा सकता है, और 1:1 के अनुपात में गेहूं की भूसी और जौ, जई, या मक्का के मिश्रण को बकरियों को खिलाया जा सकता है।

**कॉन्सेंट्रेट मिश्रण में निम्नलिखित घटक होने चाहिए (भागों में) :**

सामग्री	भाग
चना	20
मक्का	20
मूंगफली-खली	35
गेहूं की भूसी	20
खनिज मिश्रण	2.5
साधारण नमक	0.5

## 2. नवजात पशुओं का पोषण

नए जन्मे हुए बकरी के बच्चों का पोषण विशेष ध्यानाकर्षणीय होता है ताकि वे स्वस्थ और ऊर्जावान रहें। प्राथमिक तौर पर, नए जन्मे हुए बकरी को पहले 24 घंटों में माँ के दूध को पीने का अवसर देना चाहिए, जिसमें कई महत्वपूर्ण पोषक तत्व और प्रतिरक्षण तत्व होते हैं। माँ का दूध बच्चों के लिए सर्वोत्तम आहार होता है जिसमें प्रोटीन, विटामिन, और मिनरल्स शामिल होते हैं जो उनके सही विकास के लिए आवश्यक हैं। सुनिश्चित करें कि बच्चों को पहले 24 घंटों में कोलोस्ट्रम (पहले दिनों का दूध) अवश्य मिले, जो उन्हें माँ के रक्षण तत्वों की सहायता से अनेक बीमारियों के प्रति सुरक्षित रखता है और उनकी प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाता है।

कोलोस्ट्रम में महत्वपूर्ण विटामिन और एंटीबॉडी होते हैं जो बच्चों को एंटरोटॉक्सिमिया और टेटनस सहित विभिन्न बीमारियों से बचाते हैं। 3 दिन की उम्र से ले कर दूध छुड़ाने तक बच्चों को दिन में 2 से 3 बार दूध पिलाना चाहिए। लगभग 2 सप्ताह की आयु तक, बकरियों को हरे चारे से परिचित कराया जाना चाहिए। एक महीने की उम्र में, उन्हें सांद्र मिश्रण (क्रीप फीड) प्रदान किया जाना चाहिए। वयस्क स्टॉक का भविष्य का प्रदर्शन उनके प्रारंभिक चरण के दौरान उनके पालन-पोषण पर निर्भर करता है। बच्चे आम तौर पर 15 दिन की उम्र के आसपास घास कुतरना शुरू करते हैं, और क्रीप फीड भी साथ-साथ दिया जाना चाहिए। इससे रुमेन का विकास तेजी से होता है। बच्चों के लिए क्रीप फीड की अनुशंसित मात्रा 50 -100 ग्राम प्रति पशु प्रति दिन है, जिसमें 22 प्रतिशत प्रोटीन होता है।

उपलब्ध रफेज के प्रकार के आधार पर दो प्रकार के क्रीप मिश्रण दिए जा सकते हैं। यदि घास और अनाज का चारा उपलब्ध है, तो 18 प्रतिशत डीसीपी और 75 प्रतिशत टीडीएन

वाला क्रीप फीड देना चाहिए, यदि फलीदार चारा उपलब्ध है, तो 12 प्रतिशत डीसीपी और

70 प्रतिशत टीडीएन वाला क्रीप फीड देना चाहिए.

### 3. जन्म से लेकर 90 दिन तक के बच्चे के लिए आहार

आयु (दिन)	माँ का दूध या गाय का दूध (मिलीलीटर)	क्रीप फीड (ग्राम)	चारा, हरा आदि प्रतिदिन (ग्राम)
1-3 दिन	कोलोस्ट्रम - 300 मिली, 3 फीडिंग्स	-	-
4-14 दिन	350 मिली, 3 फीडिंग्स	-	-
15-30 दिन	350 मिली, 3 फीडिंग्स	थोड़ा-थोड़ा	थोड़ा-थोड़ा
31-60 दिन	400 मिली, 2 फीडिंग्स	100-150	फ्री चॉइस
61-90 दिन	200 मिली, 2 फीडिंग्स	200-250	फ्री चॉइस

### 4. तीन महीने से बारह महीने की उम्र की बकरियों का आहार

प्रतिदिन लगभग 8 घंटे चरागाह में चरना और 16-18 प्रतिशत प्रोटीन के साथ 100-200 ग्रामधूपशुधदिन की दर से सांद्र मिश्रण की खुराक इस अवधि के दौरान पर्याप्त है।

बकरों को मादा बकरियों के समान ही राशन मिलता है। जहां बकरो को अलग से भोजन देने की सुविधा है, वहां उसे प्रति दिन आधा किलोग्राम सांद्र मिश्रण दिया जा सकता है जिसमें तीन भाग जई या जौ, एक भाग मक्का और एक भाग गेहूं शामिल है।

### 5. दूध देने वाली बकरियों का पोषण

प्रसव के बाद माँ को आहार देते समय उचित सावधानी बरतनी चाहिए। पहले दो या तीन दिनों में अच्छी गुणवत्ता वाले चारे के साथ थोड़ा सा अनाज मिश्रण ही खिलाना चाहिए, इस समय शुष्क पदार्थ की खपत शरीर के वजन का 4-6 प्रतिशत तक हो सकती है। निम्नलिखित राशन दिया जा सकता है।

- 6-8 घंटे प्रतिदिन 10 किलो हरा चारा चराना
- 6-8 घंटे प्रति दिन चराना और 400 ग्राम सांद्र मिश्रण
- 6-8 घंटे प्रतिदिन चराना और 800 ग्राम अच्छी गुणवत्ता वाली लेगुमिनस घास

### 6. नर बकरों का आहार

आम तौर पर नर बकरों को मादा बकरियों के साथ ही चराया जाता है। ऐसी स्थिति में नर

### निष्कर्ष

बकरियों को पोषण प्रबंधन करना, उनके स्वास्थ्य, उत्पादकता, और समग्र कल्याण के लिए एक महत्वपूर्ण पहलु है। दूध, मांस, और ऊन की योजना के लिए उचित पोषण, सतत कृषि के लिए अत्यंत आवश्यक है। बकरियों की विशेषताओं, उनकी पाचन क्षमता, और पोषण आवश्यकताओं को समझना, एक प्रभावी पोषण की रणनीति तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण है। समापन में, एक अच्छी पोषण की योजना, बकरियों की पोषणिक आवश्यकताओं और पसंदों को ध्यान में रखते हुए, सतत बकरी पालन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उचित पोषण न केवल श्रेष्ठ उत्पादन सुनिश्चित करता है, बल्कि यह बकरी झुंडों के कुल स्वास्थ्य, दीर्घकालिकता, और लाभकारीपन में योगदान करता है।